केवल तुम

काव्य संग्रह

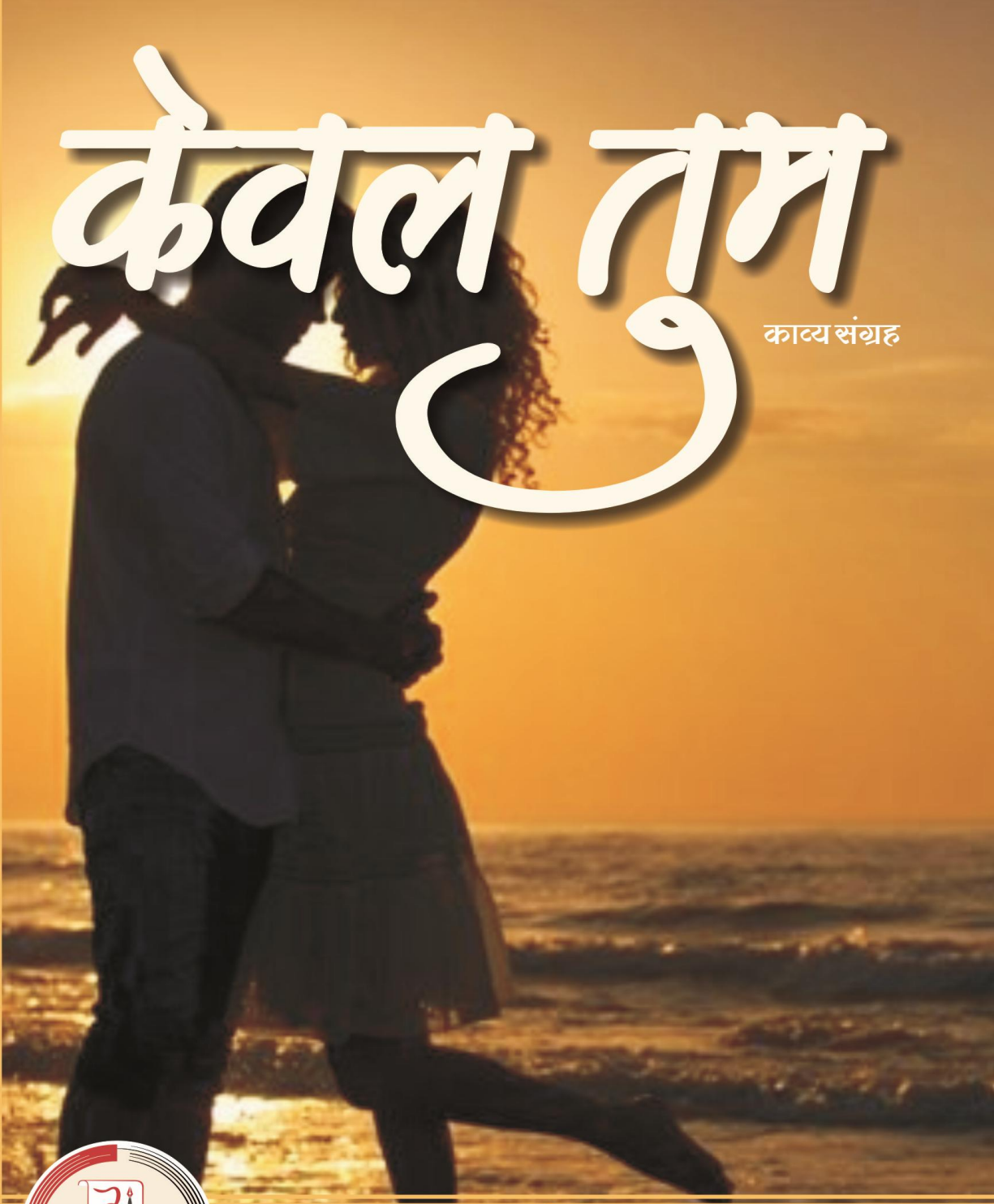

पूनम (कतरियार)

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

केवल तुम

काव्य संग्रह

पूनम कतरियार

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN "978-93-5372-068-1"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

संपादक- प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक - संदीप कुमार सोनी

मुख्य कार्यालय - १५ नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म।प्र।) ४८१३३१

दूरभाष- (कार्या।) ०७६३३-२५३१५६

मोबाईल- ६४२४७६५२५६

अणुडाक - antrashabdshakti@gmail.com

अंतरताना - www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण - २०१६, **पूनम कतरियार**

आवरण चित्र - **संदीप सोनी, वारासिवनी**

मूल्य - ६०।०० रूपये

मूद्रक- **शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी**

KEVAL TUM BY POONAM KATRIYAAR

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

भूमिका

अनादिकाल से यह चर-अचर जगत ढाई आखर के शब्द के मोहपाश में बंधा है। कोई इससे विलग नहीं रह पाता। उसका मिलन हो कि वियोग, यह मायने नहीं रखता। बस उसकी उपस्थिति या प्रतीति होनी चाहिए। वह चपल-वाचाल हो या गंभीर-मौन, उसके लिए हृदय में प्रतिपल भाव उद्वेलित होता रहे। कहते है कि प्राणी जगत् के इस स्थाई-भाव पर संसार में सबसे अधिक काव्य रचे गयें हैं। हिंदी साहित्य में तो रीतिकाल के रूप में, प्रणय और परिणय ने पूरा एक काल अपने नाम कर रखा है। भक्तिकाल में भी द्वेत-अद्वैत के रूप में प्रभु का आलंबन लेकर भक्ति के बहाने प्रेम की निर्झरिणी अजस्त्र बही है। आज के दौर में भी प्रेम या श्रृंगार भाव का प्रकाशन रचनाओं में निर्बाध हो रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि, आज का रचनाकार प्रेम को सहज रूप में निवेदित कर रहा है। जीवन के हर पहलू में जिस परिस्थिति में, और जिस वय में वह जिस अनुभूति से गुजर रहा है, बिना लाग-लपेट के उसकी अभिव्यंजना अपनी रचनाओं में कर रहा है। प्रस्तुत पुस्तिका 'केवल तुम' में मैंने ऐसे ही भावोच्छवास को शब्दों में उकेरने का प्रयास किया है। सहृदय पाठक इन्हें पढ़कर आनंद लें। आपकी अमूल्य प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी।

पूनम (कतरियार)

अनुक्रमणिका

1.	ओ मोहक!!	5
2.	प्रीत	6
3.	वो कौन	7
4.	बसंत	8
5.	मनमीत	9
6.	ताना-बाना	10
7.	अचानक	11
8.	छवि	12
9.	पुकार	13
10.	पुलक	14-15
11.	साथ-साथ	16
12.	मेरे नाविक! मेरे मल्लाह!!	17
13.	हम	18
14.	मेरे हमसफर	19
15.	प्रेम-१	20-21
16.	प्रेम-२	22
17.	प्रेम-३	23
18.	तुम-१	24
19.	तुम-२	25
20.	तुम-३	26
21.	तुम-४	27
22.	तुम-५	28
23.	तुम-६	29
24.	तुम-७	30
25.	तुम-८	31
26.	फुरसत	32

ओ मोहक!!

ओ मोहक! अभिनव श्रृंगार मेरे!!
न दे सकती तुम्हें,
आसमान-सा विस्तार,
न ही दे सकती,
सुधाकर की चषक-भर सुधा,
समस्त शुचिता निवेदित तुम्हें
मन-वचन के सारे भाव समर्पित।
हृदय के वितान में बुनती रही,
बस एक ही ताना-बाना।
कालातीत हो संग-साथ,
अनंत-पध पर हो हाथों में हाथ।
डूबते-उतराते मृदु-भाव के हिलोर में
बहती रहे निरंतर,
प्रीत-विश्वास की अजस्त्र-धार,
ओ मोहक! अभिनव श्रृंगार मेरे!!

प्रीत

सुषुप्त थे जो,
भाव अबतक,
अंगड़ाई ले जाग उठीं।
झंकृत मन-वीणा हुआ,
मंत्रमुग्ध-मौन गाये गाना।
आलिंगन, लगी करने,
कोमल वल्लरियां
द्रुम शाखाओं काय
अव्यक्त लज्जा,
भर गई, फूलों में,
तितलियां हंसकर,
छेड़तीं-गुदगुदाती
मलय-समीरण सा,
प्रिय, तुम्हारा हौले,
दबे पांव आना,
झर-झर हरसिंगार ने,
खींचा हाय कितना सुंदर,
प्रीत का बुना ताना-बाना।

वो कौन

मन में न जाने,
वो कौन बस गया है
सुधियों में जिसके
भोर हो जाती है
लाल-लाल-डोरे,
शर्मोहया से लिपटे,
आंखों में उतर आती है
बेतरतीब से केश,
सहेजने लगती है,
बात-बेबात, जब-तब
मुसकाती रहती हैं
दादी की दवा अम्मां को,
चाय का प्याला बेवक्त,
बाबा को दे आती है
सबसे छुप-छुपकर,
नियत समय पर,
झरोखें से ताकती है
गली में झांकने से पहले,
दर्पण निहारती है,
दुपट्टा संवारती है
बिंदास सी रहती है,
संगीत-सी लहराती है
कभी,उदास हो जाती है
पास रहकर भी,
बेगानी-सी हो जाती है
पूछो उससे कुछ तो,
बेसाख्ता हंसती है,
कभी कुनमुनाकर,
बात टाल जाती है।

बसंत

निर्जन-मन केय
सूने कोने को,
मकरंद सुवासित थे करने लगे।
कोयल की हलचल बढ़ने लगी।
तितलियां थी चुहल करने लगी।
मन का एकांत,
यूं भंग हुआ,
पीली-सरसों भीतर खिलने लगे।
फिर, महुआ-रस में,
पगे चितवन को,
प्रिय कहां से तुम मिले?
क्वांरपन की बयार,
महकने लगी,
प्रीत-अमंद के प्याले
ढरकने होने लगे।
तन-मन टेसू की,
लालिमा से मल,
मादक नैनों ने,
मनुहार किये,
भला, तुम में भी कहां होश बचा?
अब समय कहां?
जो विचार करे।
मधुरंजित बसंत,
बनकर जीवन,
मधुमास दिवस,
मधु-पर्व पर आ,
प्रिय तुम ने झट से हाथ धरे।

मनमीत

बालपन था,
अल्हड़ मन था।
बेझिझक झूमते
आम्र-पल्लव थे।
चूम लिया जो,
भागती हवा को,
शरमायी छिपी आ,
मेरी धानी चूनर में।
लहराती चूनर,
टकराई तुम से।
कोयल ने गाकर,
संदेश दिया।
यूं आ गयें तुम,
मेरे एकांत मन में।
आह्लादित-मुदित हम,
चल पड़े अनजान पथ।
ऊबड़-खाबड़, सतत-संघर्ष
बीतते गए कितने ही बरस?
देखें कितने उतार-चढ़ाव,
संग साथ सब हम झेल गए,
बालपन की तरुणाई जाने लगी,
थककर थोड़ी सुस्ताने लगी।
हंसते-हंसते सब खेल गए।
कभी हारे हम, कभी जीत गये,
तुम मीत मुझे नित थामें रहें,
हम लिखते अब भी गीत रहें।

ताना-बाना

देखा था,
क्षणभर तुमने,
हंसकर पूछा था,
'नाम' सांवरे।
लाज से लटें,
झूलें कपोल पर,
मैं भी थी फिर,
थोड़ी घबराई।
हवा ने छेड़कर,
काटी चिकोटी,
पिंकी ने गायें,
खूब मंगल-गान।
महुआ ने दी,
उड़ेल मादकता,
बौंराने लगा,
ये मासूम प्राण।
था किसी ने रचा,
तिलिस्म कोई,
या, बुना प्रीत ने,
कोई ताना-बाना।
पलभर में हो गया, वो अपना
था अबतक निपट जो अनजाना।

अचानक

यूं ही थोड़ी न होता है!
अनदेखे अनजाने से
नेह थोड़ी न होता है!
अचानक एक दिन
समक्ष आ जाते हो
रोम-रोम में छा जाते हो
समझने लगते हो
अनकहे वचन मेरे
मंत्र सा जपते
अधर नाम तेरा।
हवा गुनगुना उठती हैं
धूप मीठी हो जाती है
सोंधी सुरभि माटी की
अंतर में बस जाती है।
मादक महुआ की महक से
तुम भी कहां बच पाते हो?
सोचो, ऐसा क्यों होता है?
क्या है सब इतना आसान?
नहीं, सब है विधि का किया
हां, है सब उसका ही विधान!!

छवि

चंदा की छलनी से,
निर्झरिणी ज्योत्स्ना की,
उतर रही अजस्त्र यों,
परियों के धवल-दुकूल
हहर-हहर झरझरकर!
शीतल बयार संग, कभी
क्वांरे के भाव-सी,
मन कुनमुना कर,
इधर-उधरभाग रहा,
निर्बाध-निरंतर
अंतर अकुलाता है,
हहर-हहर झरझरकर!
तन अंगड़ाई लेता हैं
नौकरी ये बैरन है,
परदेस में साजन है
छवि न देख पाऊं री!
मिल नहीं पाऊं री!
हहर-हहर झरझरकर!
क्या मैं जतन करूं?
हिय के हिंडोले पर,
पिय को झुलाऊं ये
सोलह श्रृंगार करूं,
पिय को रिझालूं रे!
हहर-हहर झरझरकर!!

पुकार

काली-अंधियाली रात,
चपला चमके बे-बात,
घटा घुमड़-घुमड़ बरसे,
मिलन को मन है तरसे।
पवन सनसन कजली गायें,
पपीहा पिउ-पिउ चिल्लाये।
लिपटे तरुवर से वल्लरी,
चित्त अब कैसे धरे धीर?
खनक कर चूड़ियां हरी,
सरक कर धानी चूनरी,
पाजेब-बिछुआ तज लाज,
प्रियतम, तुम्हें है पुकारे।
निर्मोही छोड़कर सब काज,
चलो,झूला झूलें हम आज,
प्रीत के भंवर में खोकर,
सावन के गीत आज गायें।

पुलक

वो, बीच शहर
पुलक-सा ठहर
देखा था न क्षणभर!
हां, उसी पल जल उठी थी
आस की लौ
मन के भीतर
मृदुल-भाव के
घृत पिघल रहे थे
ठीक उसी समय,
प्रीत बयार भी
थी हुई चपल
झूल आयें थे लट
मेरे कपोल पर
और, हौले से
सहेज दिये थे
अलकों के उन
वल्लरियों को
तुमने ही तो!
संस्पर्श वह, वह छुअन
आलंबन प्रेम का गयी बन
उठने लगी बार-बार

लालसा की लपट
हर आहट पर था
चौंकता मेरा मन
फिर, तुम्हारा दंभ
कुछ मेरा अहं
चकमक पत्थर-सा
लगे आपस में टकराने
भभकी लौ, फिर,
दहक उठी ज्वाला।
मन की चिता में शेष,
राख-राख, केवल राख.....!

साथ-साथ

द्रुम-दलों के शीर्षों पर,
विस्मित थे जब तुहिन कण।
नेह से अभिसिक्त थे हम भी,
यौवन का था प्रथम चरण।
धीमे-धीमे पौ फटे 'औ'
सुहानी भोर थी इठलाई,
रक्तरंजित कपोल हुए थे,
नमित पलकें भी शरमाई।
हौले से उच्छवास हमारे,
फैल गए घर-बाहर भी।
बड़े-बूढ़ों ने असीस धरी,
अम्मां ने खूब बलैया ली।
शगुन-परिमल, शीश तेरे,
आंचल मेरे सुहाग भरे।
साथ साथ सात पग चलें,
अग्नि-कुंड के सात फेरे।
'सुमंगली' के सात-वचन वो,
सात जनम का गठबंधन।
प्रणय-सूत्र से बंधा परिणय,
साथ-साथ का पावन बंधन।

मेरे नाविक! मेरे मल्लाह!!

प्रीत-दुलार में धंसे हम,
जहां भी चाहो ले चलो तुम।
सांसों से डगमग ये नैया
पतवार तेरे हाथ दी है।
ऐं मेरे जीवन के खेवैया,
दलदली-मटमैली राह हो,
उमस-बेचौनी और दाह हो।
धार हो या मझंधार हो,
छूटता बाबुल का द्वार हो
जिस दिशा में ले चलो तुम,
वही दिशा हमारा सबेरा।
ठहर गया जहां यह सफर,
वही किनारा, घर हमारा,
मेरे नाविक! मेरे मल्लाह!!
मांगती न कोई छल्ला।
विश्वास हो हमारा गहना,
प्रिय कभी न मुझको छलना।

हम

हां,
तुम्हारा साथ,
भरता आह्लाद,
लगने लगती
आसमां जमीं।
सपने जीवंत हो
निहारते अपना
प्यारा घर-संसार।
तुम्हारी छुअन,
यूं भरती एहसास,
कि, कठोर अवनि,
लगती मखमली सेज,
और मन बादल बन
उड़ जाता संग तुम्हारे,
दूर उस एकांत में,
जहां बस है सिर्फ,
तुम.. और.. मैं
छोड़कर अपना वजूद,
हैं केवल.. 'हम'..
हां.. केवल 'हम'

मेरे हमसफर

ठुमक ठुमक कर चलती थी,
रुनझुन पायलियां बजती थी,
फूलों से जीवन महकता था,
वो बाबुल की गलियां थी।
गलियों से बाहर था राजपथ,
जुड़े थें उससे कितने ही पथ!
सुना था,वो राह तिलिस्मी है,
भव्य भी है और भयावह भी।
उस राह में है कहीं फूल बिछे,
कहीं गड्ढे है और कांटे भी कहीं।
डगमग पग, थर-थर हियरा,
उस पथ पर आगे बढ़ूं कैसे?
ऐसे में प्रिय तुम्हारा आना,
डूबे को जैसे साहिल मिला।
हाथों में थामकर मेरा हाथ,
आंखों ही आंखों में अपनाना।
आकर्षक बन गया यह सफर
जो तुम बन गये मेरे हमसफर!

प्रेम - १

बेसुध-व्याकुल वह,
दर्शन की प्यासी वह,
हिय में उमंग लिये,
मिलन की तरंग लिए,
काम-काज छोड़कर,
लोक-लाज छोड़कर,
यमुना के कछार पर,
ब्रज के द्वार पर,
कदंब के डाल तले,
वृंदावन-निकुंज में
निर्जन-वन, एकांत में,
चित्त से अवश वह,
नंगे पांव भागी है,
कान्हा तेरी बंसी की,
बस एक तान पर,
सुध-बुध बिसारी है।
नियति का चक्र तो,
सबकुछ नित बदलता है।
केवल तुम अनित्य थे।
तुम कैसे बदल गये?
छलिया, पद-मद में चूर,
प्रेम को भी छलने लगे।
आज, राधा भयाक्रांत है,

प्रेम से घबराती है।
मिलन की चाह है,
पर तुमसे डरती है।
निर्जन-एकांत में,
अक्सर गांव-प्रांत में।
झाड़ियों में, खेतों में
क्षत-विक्षत मिलती है।
चक्रधर महाराज तुम,
मुरली हाथ में धर लो न!
अधरों पर फिर से,
मधुर बंसी लगा लो न!
राग वहीं छेड़ो न,
राधा को बचा लो न!
जग में फिर से,
वही प्रेम बसा दो न!

प्रेम-२

हाँ कृष्ण,
इतरा उठा था मन, इठला उठी थी मैं,
बनकर अर्द्धांगिनी, जगत की स्वामिनी,
तेरे नाम का सिंदूर, ये बिछुआ, ये पायल,
ये मेंहदी-महावर, ये हार और झूमर
ये कर्णफूल-कंगना, ठुमकना तेरे अंगना
इन सब में खोई मैं, सोती थी बेसुध मैं
रात थी आधी वह चांद भी था आधा,
नींद में पुकार रहे थे, तुम राधा-राधा,
मैं तेरा श्यामसुंदर तुम बिन हूं आधा
सुन्न हुए कान तब, कर्णफूल गिरा,
कजरा धुल गयें, नींद ने मुख फेरा
छन से मन टूटा, क्षण में अभिमान,
फीके पड़े सारे एशो-आराम, गान
अब तेरी बातों में रस नहीं मिलता,
तेरे मीठे वचन भी करेले-सा लगता।
कहने को तो मैं तुम्हारी पटरानी बन गई,
महल के ऐश्वर्य-वैभव की स्वामिनी बन गई।
किंतु आज भी राधा, तुम्हारे संग विराजती,
मैं तो हमेशा के लिए 'रानी-रुक्मिणी' बन गई!

प्रेम-३

अनुभूति होती हैं मुझे,
रहते हो प्रतिक्षण,
ईर्द-गिर्द मेरे
तमाम तुम्हारे दुख,
रोज की परेशानियां,
मेरे जीवन में है समाये
रोज करती हूं जतन कि,
खुशियां खिलखिला उठे,
तेरे खींझते जीवन में
मंदिरों-दरगाहों में,
नंगे पांव,निर्जला,
भागती रहती मौन
मन्नतों-प्रार्थानाओं में
केवल तुम ही रहें हो
अपनी भावनाओं,
अपनी इच्छाओं का,
करती रही बलिदान
पर कहां समझ सकें तुम
प्रेम की इस गहराई को?
रूप-रंग के समंदर में,
उलझा तुम्हारा मन,
पक्षी बन भटकता रहा
प्रेम की तलाश में
और, सहज -सरल,
इस मौन प्रेम को,
पढ़ न सके तुम।

तुम-१

अनजाने बहती रही,
पावन-प्रीत के
अजस्त्र-धार में...।
जाने कब!
हो गये स्फुरित,
सुषुप्त-भाव मेरे
लगने लगे तुम..।
(चिर काल से)
अभिन्न-योग,
मेरे जीवन के
हां सु-सम्मोहन था
कि, विकल-प्राण मेरे,
बंध गये उस देहरी से,
जहां अहर्निश,
जला रखा था तुमने,
एक दीया मेरे नाम का

तुम-२

दीये की जोत जो हो तुम
सनेह का धृत मेरा है
सुवासित हवन-धूप-सा
मेरे रोम में बसे हो तुम
जीवन यह ढोल है मेरा
तेरे थापों बिना सूना
जो तुम्हारी धूप पड़ती है
तभी होता मेरा वादन
मेरी पूजा, मेरा अर्चन
मेरा वंदन, मेरा गायन
भजन की लय तुमसे है
सांसों की लय तुमसे है
मूंदे-नैनों की कामना हो
अधर की अस्फुट-प्रार्थना हो
जीवन मंदिर के दीप तुम मेरे
उपासना भी, आराधना भी।

तुम-३

तुम,
पूरा आसमान।
उतरकर आंखों में मेरे,
पूरे वजूद में गये हो फैल।
रूई के फाहों से भी हल्की,
झट, मन में तैरती इच्छाएं,
जैसे, सफेद बादलों के टुकड़े
उमड़ते-घुमडते सीने में,
इस शुभ्र-नीरभ्र आसमान में।
हां, तुम ही हो
सहलाते-दुलराते हो
हौले से थपकी देते
निभाने में 'दायित्व'
झोंक देते हो अपना
समस्त-सामर्थ्य
न हो पाये तो भी,
भरते रहते हो हौसला
कि, है ये आसमान,
केवल तुम्हारा
हां! सिर्फ और सिर्फ तुम्हारा।

तुम -४

मेरे अंतस्थल में जो है
संवेदनाओं का ताना-बाना
तुमने ही तो है यह बुना
मैं तो निपट था अनजाना
मैं ठिठुरती सर्दी-सा,
था बहुत सहमा-सहमा,
कड़क कहृफी की महक-सी
तुम, मेरे भीतर गई समा
नाजुक उंगलियों की छुअन तेरी,
भर गई मुझमें चिर नरम-सिहरन
कहने का अंदाज नया वो,
वो भोला-सा तेरा अपनापन
पलकों के बंद कपाटों में,
बेरोक तेरा आना-जाना
भूल कहां पाया अब भी
दिन-रात तुम्हारा मुसकाना
दिन बदले, दुनिया बदली
बदल गई तकदीरें भी
मेरे जज्बातों में डूबकर,
तुम भी हो कुछ यूं बदली,
न चैन तुम्हें मेरे बिन है,
न मै एकाकी रह पाता।

तुम-५

थोड़ा बुदबुदा कर,
कभी अनसुना कर,
चल देते अपनी राह
मैं भी कहां चुप रहती?
खीझती-बड़बड़ाती,
लेती हूं तुम्हें पुकार
समक्ष तेरे रख देती हूं,
समस्त सहूलियतें तेरी
तुम भी कहां अकड़ते हो!
मान लेते हो मेरी हर बात,
किसी अबोध बच्चे की तरह
कभी अचानक पूरी कर देते
मेरी अनकही दिली-चाहतें
नजरअंदाज कर देते हो,
मेरा आवेश, मेरी गलतियां
अहमियत मेरी दर्शा देते हो,
जीवन में तेरे कितनीअहम हूं!
नाजुक मन भींगता निरंतर,
तुम्हारे अहसासों में चिरंतर
सोचता बावला मन पागल!!
आखिर तुम इतने खास क्यूं हो?

तुम-६

मेरा दर्द, मेरी प्रीत,
नाराजगी, अपेक्षाएं मेरी
बोलूं या रह जाऊं मौन
फर्क नहीं पड़ता तुम्हें।
कुछ नहीं समझ पाते,
बेदिल, पत्थर दिल,
जाने क्या कहूं तुम्हें?
बिना नखरे-शिकायत के,
बिना फरमाईश-तारीफ के,
जैसी भी परोस दूं थाली,
प्रेम से खा लेते हो,
और
बेपरवाह निहार लेते हो
हौले से लटें सहलाते,
फिर से खो जाते हो,
रिमोट को अनवरत छेड़ते,
मोबाइल-लैपटॉप चलाते,
मशगूल हो जाते हो अक्सर
भविष्य की योजनाए बनाते।
जीवन के कठोर धरातल पर,
जिंदगी खुशियों से हो भरी,
इस अदम्य लालसा के साथ।
इत्तेफाक से आ जाती हूं मैं,
आंखों में भरकर शिकायतें,
बेचौन हो जाते हो तुम,
टटोलने लगते हो नब्ज मेरी,
बताया क्यों नहीं कुछ मुझे?
सिर दबाते नाराज होते हो।
मन महक उठता है,
बेली खिलने लगती है,
तुम से मिलना मात्र संयोग नहीं,
जीवन की अद्भुत नियति लगती है।

तुम - ७

रोज की आपाधापी में,
खो रहे 'मैं' के समक्ष,
अनायास होना तुम्हारा
कुछ वैसा ही था ज्यों,
भारी बरसात के बाद,
निकली हो गुनगुनी धूप।
मौसम बौरानें लगें थें,
शोख अदायें इतरा कर,
लुभाने लगी थी सादगी को।
दर्पण में भी संग हमारे,
चुपके-चुपके आकर,
मुस्कुरा कर छेड़ते थे 'तुम'
तल्ख दिवस के तेवर,
अब बदले से थे,
स्याह रातों के जज्बात,
लाज से सिमटने लगें थे।
वो गिलट के छल्ले,
कांच की रंगीन चूड़ियां,
कभी बालियां, नेलपॉलिश,
जिंदगी की बेशकीमती सौगातें
देकर सम्मोहित कर लेते थे मुझे।
आखिर बारिश की धूप चली गई,
छोड़कर उमस और बेचौनियां,
उपहार सभी बेरंग हो बिखर गयें,
वो प्रणयोपहार तुम्हारा,
सूखा लाल गुलाब फूल,
किताब के पन्नो में दबा हुआ
आज भी टीसता है मुझे।

तुम - ८

बरसों की यात्रा ने,
मुकाम तक पहुंचा दिया,
हंसते, रोते-गाते आखिर,
उम्र की ढलान पर ला दिया।
सुस्ताती है थकान भी अब,
दृष्टि भी थोड़ी क्षीण है,
उंगलियां गिनती बार-बार
बचे अब कितने दिन है?
छटपटाता है वृद्ध-मन आज,
तुम भी तो जग छोड़ गई?
खनखनाती चूड़ियां तुम्हारी,
यूं ही पड़ी, उदास है।
रोटियां तो है मिल जाती,
स्वाद तुम्हारे संग गया।
तुम्हारे गुस्से-आवेश के लिए,
घर का कोना-कोना रोया।
केबल-टीवी, सब है लेकिन,
गुनगुनाहट किसी की खलती है।
चाय के प्याले वहीं हैं,
दरवाजे खिड़कियां भी वहीं।
बच्चों के लाड़ वहीं है,
मेरे लिए फिक्र भी वहीं।
घड़ी भी चल रही सही,
सबकुछ तो वैसा ही है,
फिर भी जाने क्यों?
सघन कोहरे में क्षीण-नजर को
तुम ही नजर सिर्फ आते हो।
झंझावात के तड़तड़ाहट में भी,
कांपते कर, तेरी तस्वीर ही थामते
हैं।

फुरसत

चलो मिलते हैं,
एक बार हम
बस यूं ही उनसे।
बिन बुलावे के,
खटखटा दे कुंडी,
पेशोपेश में डाल दें,
उनको बस यूं ही।
बचपन की कोई बात,
छेड़य गुदगुदा दें उन्हें,
कर दें गाल गुलाबी,
उनके फिर से यूं ही।
मुद्दत हुआ उनके,
गर्मजोशी से हाथ थामे।
मुद्दत हुआ उनके,
आंखों पर धरे हथेलियां।
पांवों में बांध चकरी,
बस यूं ही भाग रहे हम सब।
जमाना हुआ ठिठक कर,
देखें एक-दूजे को यूं ही।
ऐं वक्त,
इतनी-सी है बस गुजारिश,
हो सके तो जरा ठहरकर,
सोचना संजीदा होकर,
थोड़ी फुरसत बची तो,
मिल लेना हमसे यूं ही।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - पूनम (कतरियार)
जन्मस्थान - 8 अगस्त, हजारीबाग(झारखण्ड)
शिक्षा - एम.ए., पत्रकारिता में डिप्लोमा, नेट, युजीसी.
संप्रति - लेखन
पता - बी-202, ओम- निलय अपार्टमेंट, खेतान गली
बोरिंग कैनाल रोड, पटना -1
ई मेल - poonamkatriar@yahoo.com
प्रकाशन - काव्य संग्रह- आगाह , शब्दनाद, संचरण,
कथा संग्रह- केक
साझा संग्रह- विवेकानंद एक आदर्श, मातृभाषा.कॉम भाग 2,
स्त्री तू सृजक, माँ, काव्य-शिखा, विव्हल हृदयधारा
वूमन आवाज भाग 2- होली हुडदंग, रंग बरसे
सम्मान - वूमन आवाज सम्मान 2018,
मातृभाषा उन्नयन सम्मान 2019,
अंतरा शब्दशक्ति गौरव सम्मान 2019,
अंतरा शब्दशक्ति साहित्यकार स्वाभिमान सम्मान 2019।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-068-1
मूल्य 60/-
शब्द सुगंध